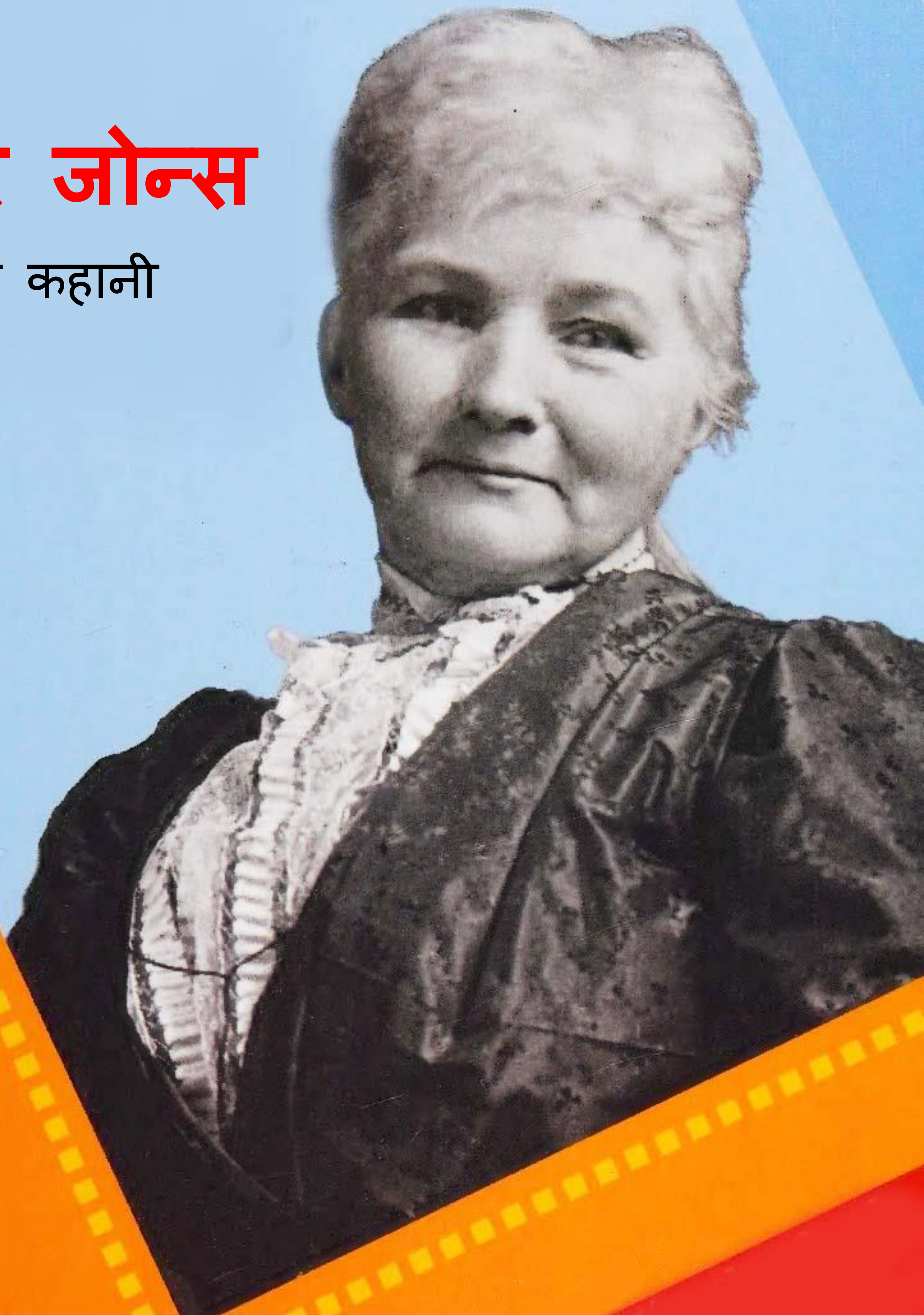
मदर जोन्स

की कहानी



राचेल ए. कोएस्टलर-ग्रैक

मदर जोन्स

की कहानी



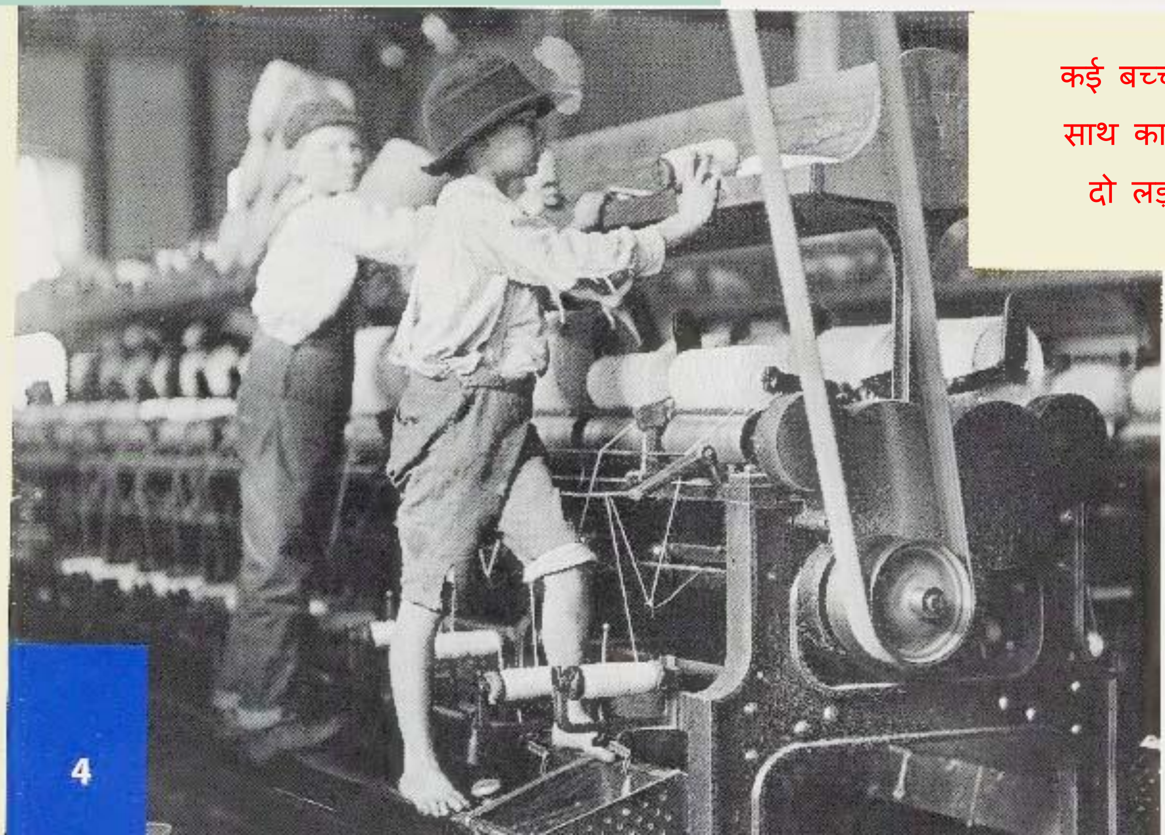
राचेल ए. कोएस्टलर-ग्रैक

विषयसूची

काम पर बच्चे

1894 में, मैरी जोन्स अलबामा की एक कॉटन मिल में गईं. वो वहां कपड़ा फैक्ट्री में काम की स्थिति का गुप्त रूप से निरीक्षण करने के लिए गई थी. मैरी ने छोटी लड़कियों और लड़कों को कपास के टूटे हुए धागों की मरम्मत के लिए अपने छोटे हाथों से भारी मशीनरी चलाते हुए देखा. जबकि बाहर सूरज चमक रहा था और नीला आकाश बच्चों का इंतज़ार कर रहा था.

"अधिक पैसा कमाने के लिए बहुत सारे बच्चों को दुनिया में लाने का क्या फायदा... जबकि उनकी छोटी जिंदगियां मिल और वर्कशॉप में बर्बाद हो रही हैं?"
- मदर जोन्स



कई बच्चे कारखानों में मशीनों के साथ काम करते थे. यहां चित्र में दो लड़के बॉबिन बदल रहे हैं.



कारखानों में बच्चे कम वेतन पर लंबे समय तक काम करते थे. वे इतने थके जाते थे कि वे अक्सर अपना लंच ब्रेक खेलने के बजाए आराम करने में बिताते थे.

लेकिन दोपहर के भोजन के अवकाश के समय, युवा मज़दूर खेलने के लिए बहुत थके होते थे. बच्चे मक्के की रोटी और एक प्रकार का नमकीन और सूखा सूअर का मांस, जिसे "फैटबैक" कहते हैं को खाते-खाते सो जाते थे. आधे घंटे की छुट्टी ख़त्म होने पर बॉस उन्हें हिलाकर जगाता, और फिर बच्चे बाकी दोपहर और शाम अँधेरी मिल में बिताते थे. दिन के अंत में उन्हें केवल 10-सेंट की दिहाड़ी ही मिलती थी. मैरी ने लिखा, "मैं घोषणा करती हूं कि उनकी छोटी-छोटी जिंदगियां उनके द्वारा बुने गए सूती कपड़ों में बुनी गई हैं."

मैरी को बड़े मज़दूरों के लिए बेहतर कामकाजी परिस्थितियों के लिए लड़ने की आदत थी. लेकिन अब वो कामकाजी बच्चों को उनकी लड़ाई में खड़े होने में मदद करना चाहती थीं. "मैं उन्हें बचाने के लिए दृढ़ हूं," मैरी ने वादा किया. अपने पूरे जीवनकाल में, मैरी जोन्स ने कई श्रमिकों को बेहतर कामकाजी परिस्थितियों और उचित वेतन की मांग करने के लिए प्रेरित किया. आम मज़दूरों के लिए उनकी देखभाल और चिंता के कारण ही उन्हें "मदर जोन्स" का उपनाम मिला.

अमेरिका के लिए

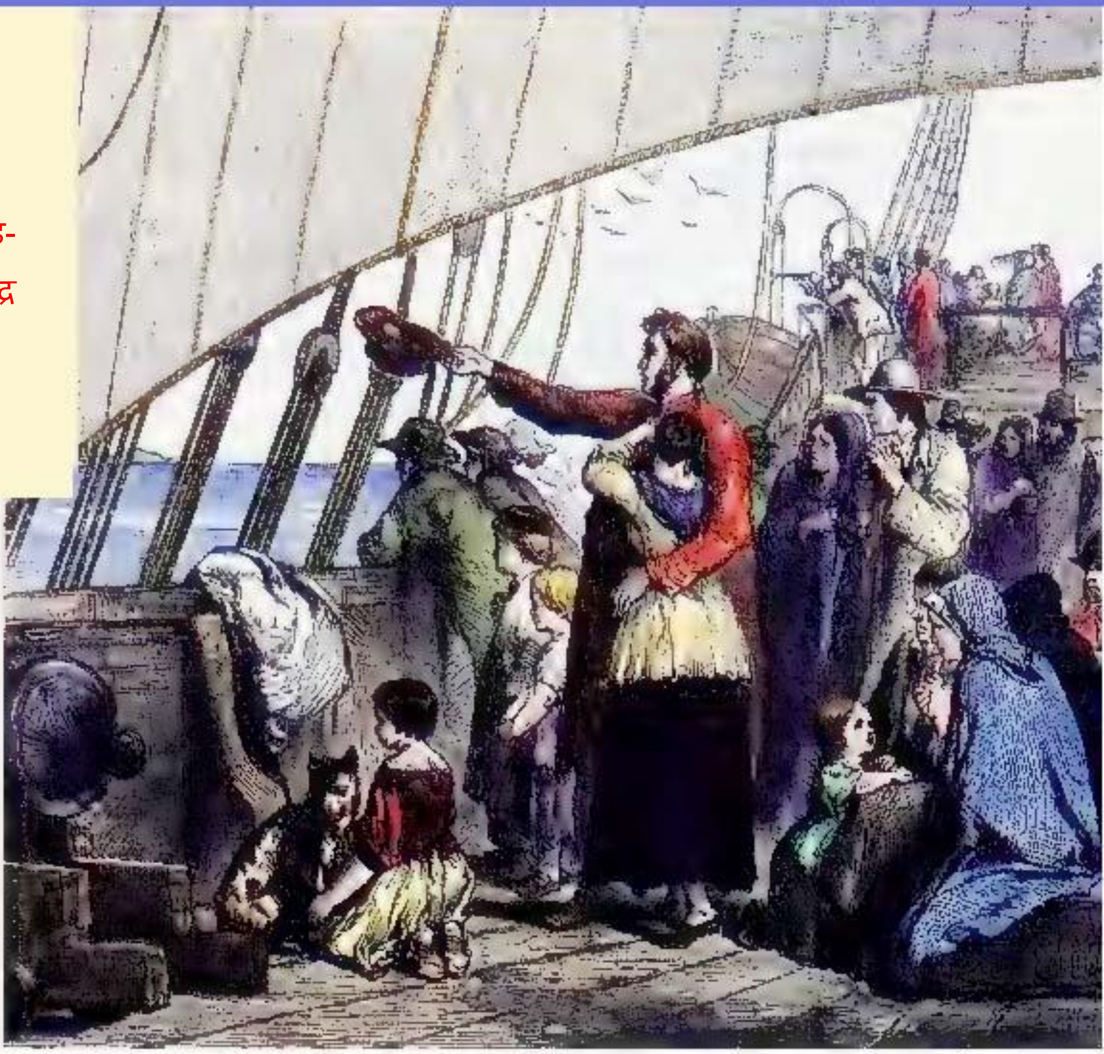
मैरी हैरिस का जन्म 1837 में कॉर्क, आयरलैंड में हुआ था. वो पाँच बच्चों में से दूसरी थी, उस समय के तमाम आयरिश लोगों की तरह, मैरी का परिवार भी बहुत गरीब था. मैरी के जन्म से पहले उनका परिवार अपने गांव का घर छोड़कर शहर चला गया था.

मैरी के माता-पिता, रिचर्ड और मैरी हैरिस, अपने और अपने बच्चों के लिए बेहतर जीवन चाहते थे. जब छोटी मैरी लगभग 10 वर्ष की थी, तब उसके पिता और बड़ा भाई अमेरिका चले गए. उन्होंने कड़ी मेहनत करके काम खोजा और अपनी मजदूरी से पैसे बचाए. 1850 की शुरुआत में, मैरी के पिता एक रेलरोड निर्माण कंपनी के लिए काम कर रहे थे और उन्होंने अपने परिवार को उत्तरी अमेरिका लाने के लिए पर्याप्त पैसा कमा लिया था.



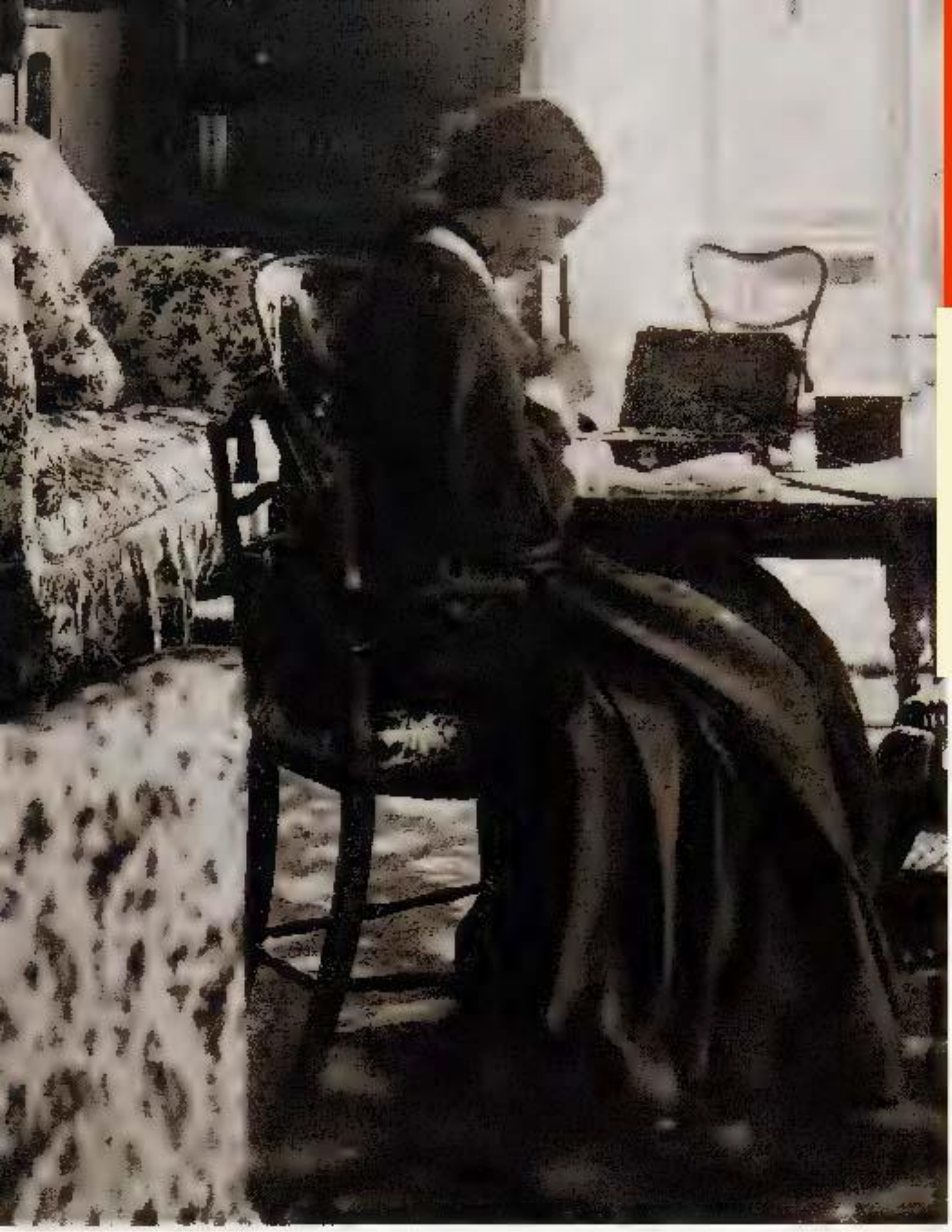
ग्रामीण आयरलैंड में कई गरीब लोग मिट्टी और भूसे से बनी झोपड़ियों में रहते थे. मैरी के जन्म से पहले, उसका परिवार शायद इसी तरह की एक झोपड़ी में रहता होगा.

जब मैरी एक युवा महिला थीं, तब उनका परिवार कनाडा में आकर बस गया. तब यूरोप से अप्रवासी, भीड़-भाड़ वाले जहाजों में सवार होकर समुद्र पार करके उत्तरी अमेरिका जाते थे.



परिवार टोरंटो, कनाडा में बस गया, जहाँ किशोरी मैरी ने पब्लिक स्कूल में पढ़ाई की. वो एक मेधावी छात्रा थी और उसने स्कूल में अच्छा प्रदर्शन किया. घर पर, मैरी ने अपनी माँ की घर की देखभाल में भी मदद की और सिलाई करना सीखा. अपने परिवार के लिए अतिरिक्त पैसे कमाने के लिए, मैरी ने पड़ोसियों और दोस्तों के लिए कपड़े भी सिले.

1857 में, जब वह 20 वर्ष की थी, मैरी ने टोरंटो नॉर्मल स्कूल में दाखिला लिया. वहां उन्होंने एक टीचर बनने का प्रशिक्षण लिया, जो उस समय महिलाओं के लिए खुली कुछ नौकरियों में से एक थी. मैरी ने एक वर्ष तक स्कूल में पढ़ाई की और टोरंटो में एक शिक्षक के रूप में नौकरी पाने के लिए पर्याप्त प्रशिक्षण प्राप्त किया.



पोशाक बनाना एक ऐसा व्यवसाय था जो 1800 के दशक में महिलाओं के लिए खुला था. गरीब महिलाएं अमीर महिलाओं के लिए कपड़े सिलकर अतिरिक्त पैसा कमा सकती थीं.

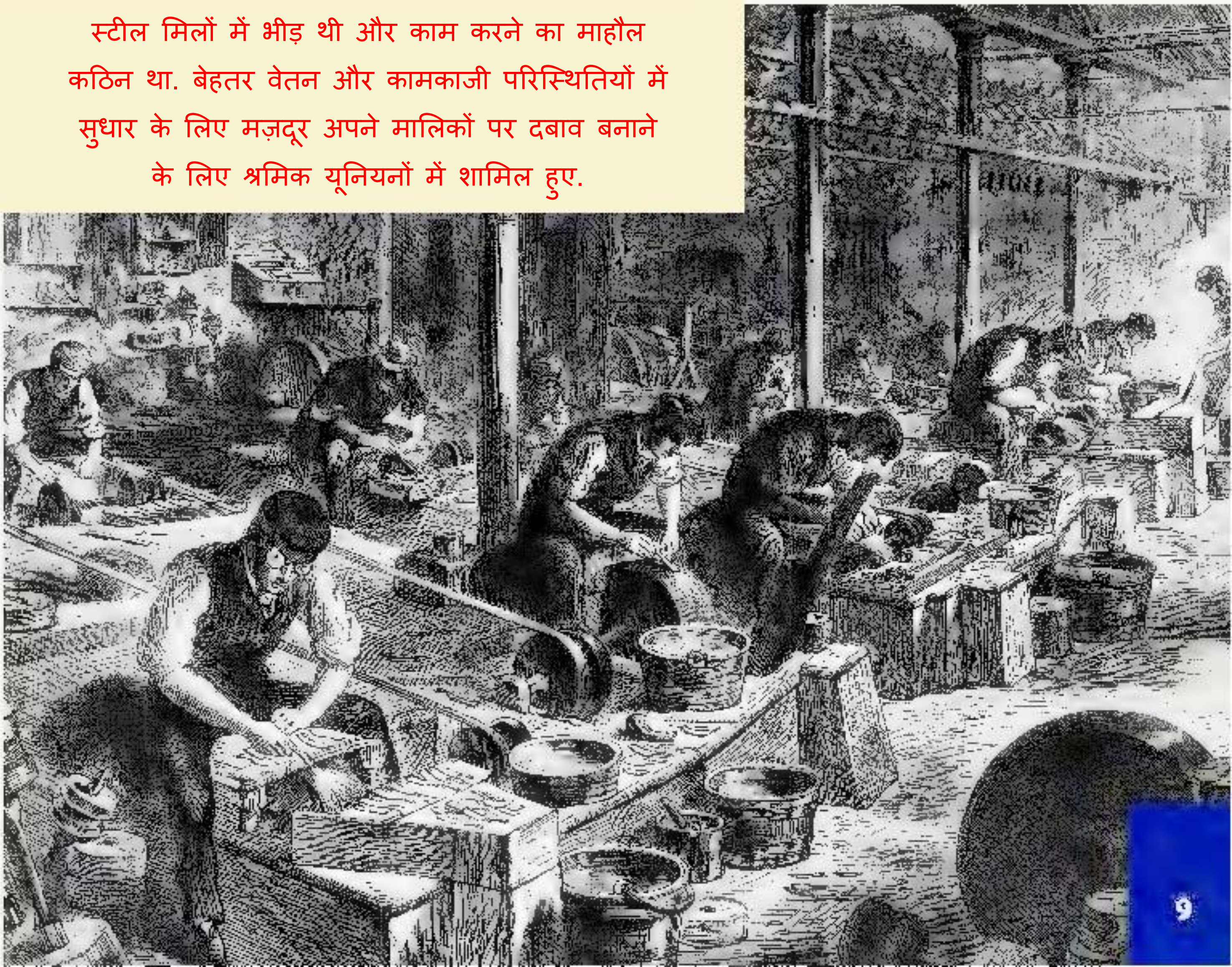
लेकिन मैरी रोमांच की इच्छुक थीं. 1859 में, उन्होंने मोनरो, मिशिगन में एक शिक्षिका के रूप में काम करने के लिए अपना घर छोड़ दिया. 1860 की शुरुआत में, वो शिकागो, इलिनोइस चली गईं और एक ड्रेसमेकर बन गईं. उस वर्ष के अंत तक, वो फिर से मेम्फिस, टेनेसी में एक शिक्षण कार्य के लिए चली गयीं.

मेम्फिस में मैरी की मुलाकात जॉर्ज जोन्स से हुई और उन्होंने उससे शादी कर ली. जॉर्ज लोहे की ढलाई का काम करता था. वो एक फैक्ट्री में काम करता था जो लोहे से बने उत्पाद बनाती और मरम्मत करती थी. मैरी और जॉर्ज ने शहर के एक गरीब इलाके में एक छोटा सा घर किराए पर लिया. उनके अधिकांश पड़ोसी कारखानों और मिलों में काम करते थे. उन्हें कम वेतन मिलता था और उन्हें जीवित रहने के लिए संघर्ष करना पड़ता था.

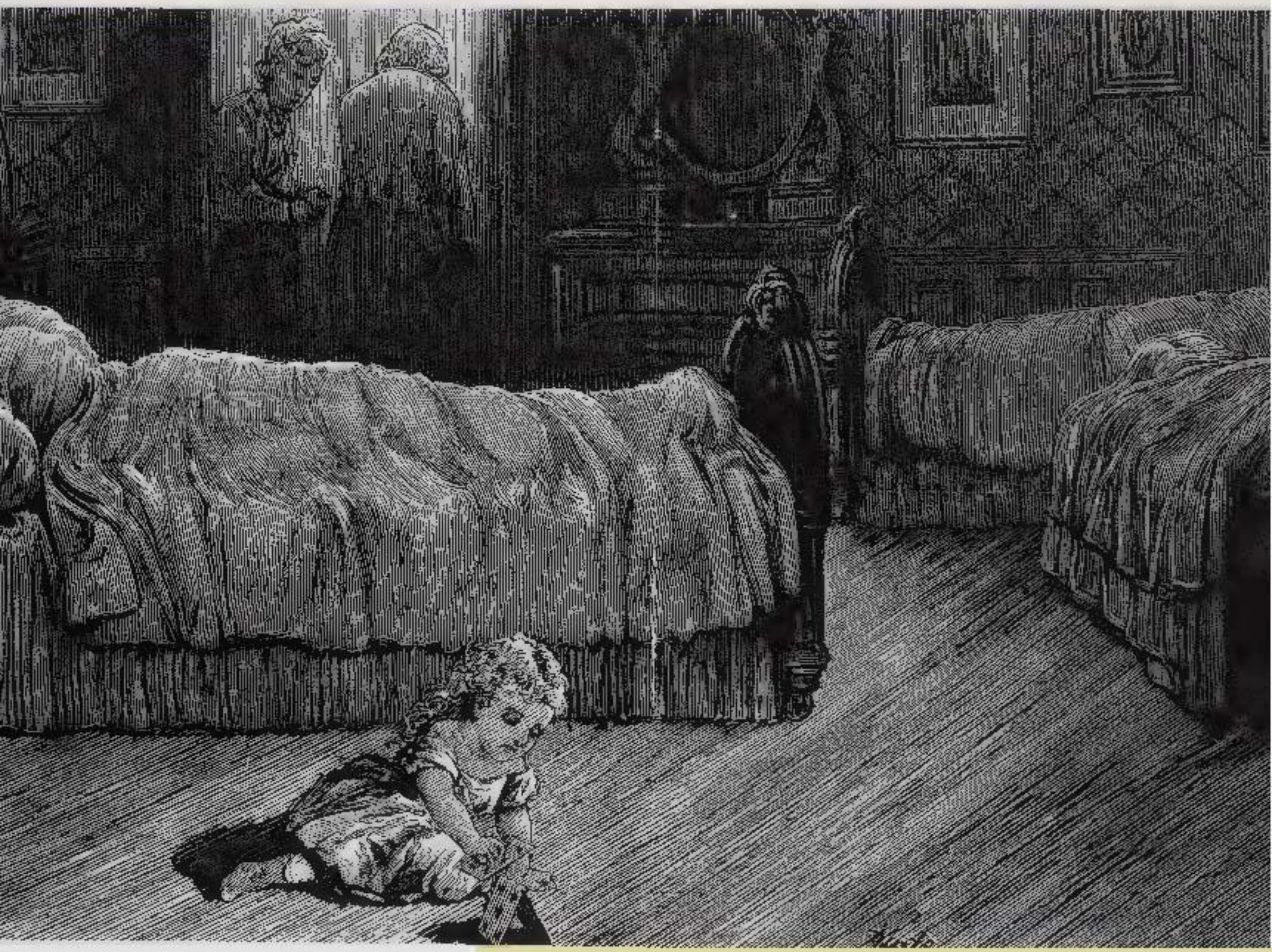
जॉर्ज का मानना था कि मज़दूरों को बेहतर वेतन और काम की परिस्थितियां मिलनी चाहिए थीं. वो इंटरनेशनल आयरन मोल्डर्स यूनियन का सदस्य और कट्टर समर्थक था. यूनियन उन लोहे के सांचे बनाने वालों को एक साथ लाई जो बेहतर मजदूरी और काम करने की स्थिति चाहते थे. एक समूह बनाकर, उन्होंने अपने मालिकों पर उनके साथ उचित व्यवहार करने का दबाव डाला. अन्य व्यवसायों के श्रमिकों ने भी उचित व्यवहार के लिए लड़ने के लिए यूनियनें बनाई थीं.

मैरी और जॉर्ज ने संघर्ष किया, और उन्होंने एक अच्छा जीवन जिया. जल्द ही उनके चार बच्चे हुए. मैरी खुशी-खुशी घर में रहती थी और अपने छोटे बच्चों की देखभाल करती थी. रात को मैरी, जॉर्ज से आयरन मोल्डर्स यूनियन के बारे में बातें सुनती थी. मैरी और जॉर्ज ने मिलकर अपने और अपने बच्चों के लिए बेहतर जीवन का सपना देखा.

स्टील मिलों में भीड़ थी और काम करने का माहौल कठिन था. बेहतर वेतन और कामकाजी परिस्थितियों में सुधार के लिए मज़दूर अपने मालिकों पर दबाव बनाने के लिए श्रमिक यूनियनों में शामिल हुए.



सब कुछ खोना



1860 के दशक के अंत में दक्षिण में येलो-फीवर का संक्रामक रोग फैला जिससे अमीर और गरीब सभी समान रूप से इस बीमारी से मारे गए. यहां एक अमीर लड़की येलो-फीवर द्वारा अपने परिवार की मृत्यु के बाद अपने घर में अकेली खेल रही है.

1867 में मेम्फिस में मुसीबत आ गयी. उस वर्ष, पीले बुखार (येलो-फीवर) के नाम से जानी जाने वाली एक भयानक बीमारी शहर में फैल गई. मेम्फिस के नागरिक घबरा गये. धनी परिवार ग्रामीण इलाकों की ओर भाग गये. लेकिन गरीब मेहनतकश लोगों के पास जाने के लिए कोई जगह नहीं थी.

जोन्स का पड़ोस पीले बुखार से बुरी तरह प्रभावित था. मैरी, जॉर्ज और उनके बच्चे उनके घर में रहे. उन्होंने उन पड़ोसियों की चीखें सुनीं जो बीमारी से पीड़ित थे. हर रात, एक घोड़ा-गाड़ी उनकी सड़क से गुज़रती थी. परिवारों ने अपने मृत प्रियजनों को बाहर निकाला. मैरी को बाद में याद आया, "मृतकों ने हमें घेर लिया था. उन्हें रात में जल्दी और बिना किसी प्रार्थना के दफनाया गया था. मैं अपने घर के चारों ओर रोने की आवाज़ सुनती थी."

तभी जोंस परिवार में भी भयानक बीमारी आ गई. मैरी के चारों बच्चे बीमार पड़ गये. मैरी ने उनकी त्वचा को पीला होते देखा. जैसे ही बुखार बढ़ा उन्हें बार-बार खून की उल्टियाँ होने लगीं, जिससे धीरे से उनके बालों को चिकने हो गए. कुछ ही दिनों में चारों बच्चे मर गये. फिर जॉर्ज बीमार हो गये और उनकी भी मृत्यु हो गयी.

"मैं अमेरिका में रहती हूं, लेकिन मुझे वास्तव में अपना पता नहीं मालूम... मेरा पता मेरे जूतों की तरह है; मैं जहां भी जाती हूं, वो मेरे साथ जाता है."

- मदर जोन्स

एक सप्ताह में मैरी ने अपना पूरा परिवार खो दिया था. "मैं दुःख की रातों में अकेली बैठी रही," उन्होंने बाद में लिखा. "कोई भी मेरे पास नहीं आया. कोई आ भी नहीं सकता था. अन्य घर भी मेरे जैसे ही प्रभावित थे." जब मैरी अपने अंधेरे और शांत घर में बैठी थी, तो उसे आश्चर्य हुआ कि वो बीमार क्यों नहीं हुई. उसके पूरे परिवार को पीला बुखार हो गया था और उसकी मृत्यु हो गई थी. लेकिन वो फिर भी जीवित थी. तब मैरी ने फैसला किया कि अब वो दूसरों की मदद करने के लिए जीवित रहेगी.

1868 की सर्दियों के दौरान, मैरी जोन्स वापस शिकागो चली गईं और कपड़े सिलने का व्यवसाय शुरू किया. मैरी के अधिकांश ग्राहक धनी परिवारों के थे.

1800 के दशक के अंत तक, अमेरिकी शहर कई फ़ैक्टरी श्रमिकों से भरे हुए थे. मैरी जिन धनी महिलाओं के लिए पोशाकें बनाती थीं और जिन गरीब लोगों के बीच वो रहती थीं, उनके बीच बहुत अंतर था.



1871 में शिकागो की महान आग पूरे शहर में फैल गई. इसने कई इमारतों को नष्ट कर दिया.



मैरी को बाद में याद आया, "अक्सर राजाओं और बैरनों के लिए सिलाई करते समय, जब मैं लेक शोर ड्राइव पर शानदार घरों में कांच की बड़ी खिड़कियों से बाहर देखती थी तो मुझे जमी हुई झील के किनारे चलते हुए गरीब, कांपते अभागे लोग, बेरोजगार और भूखे लोग दिखाई देते थे." अमीर और गरीब के बीच की खाई मैरी को परेशान करती थी. उन्हें आश्चर्य हुआ कि कैसे कुछ लोगों के पास इतना अधिक धन था जबकि अन्य लोगों इतनी मेहनत के बाद भी अपना पेट नहीं भर पाते थे.

1871 में, शिकागो में आग फैल गई. “ग्रेट शिकागो फायर” के नाम से मशहूर, उस आग ने मैरी के कपड़े सिलने के व्यवसाय को भी नष्ट कर दिया. अब वो 34 साल की थीं, ओर अब उन्हें एक बार फिर से एक नई शुरुआत करनी थी. मैरी ने जल्द ही श्रमिक संघर्ष का हिस्सा बनने का फैसला किया. वो कामकाजी लोगों को अपना जीवन बेहतर बनाने में मदद करना चाहती थीं. खनिक, फैक्ट्री मजदूर और मिल कर्मचारी अक्सर गंदी और खतरनाक परिस्थितियों में काम करते थे. मिल मालिक अपने कर्मचारियों को यथासंभव कम भुगतान करते थे.

मैरी अपनी "मातृतुल्य" उपस्थिति के लिए जानी जाती थीं. वो हमेशा एक लंबी काली पोशाक पहनती थीं और उनके बाल साफ-सुथरे जूड़े में बंधे होते थे.



संभवतः 1880 के दशक के आसपास, मैरी ने "नाइट्स ऑफ लेबर" संगठन की रात्रिकालीन बैठकों में भाग लेना शुरू किया, जो उस समय अमेरिका की सबसे बड़ी मज़दूर यूनियन थी. उन्होंने अमेरिका के मज़दूरों के लिए उचित वेतन और बेहतर कामकाजी परिस्थितियों की आवश्यकता के बारे में प्रेरक व्याख्यान सुने. लड़ाई लड़ने के लिए उत्सुक होकर वह जल्द ही यूनियन में शामिल हो गईं.

मैरी "नाइट्स ऑफ लेबर" में सबसे अलग दिखती थीं. वहाँ महिलाओं का स्वागत था लेकिन महिलाएं बहुत कम थीं. अपने शुरुआती 40 के दशक में, मैरी ने फीतों और लैवेंडर मखमल से सजी एक लंबी काली पोशाक पहनी थी. उन्होंने अपने सफेद बालों का जूड़ा बना लिया था. मैरी की सरल, "मातृतुल्य" उपस्थिति और उनके उत्कृष्ट बोलने के कौशल ने अन्य यूनियन सदस्यों का ध्यान आकर्षित किया. मैरी ने शीघ्र ही पुरुषों का सम्मान अर्जित किया. उन्होंने देखा कि मैरी के मातृ स्वरूप के पीछे एक शक्तिशाली महिला थी जो श्रमिकों के जीवन को बेहतर बनाने के लिए दृढ़ संकल्पित थी.

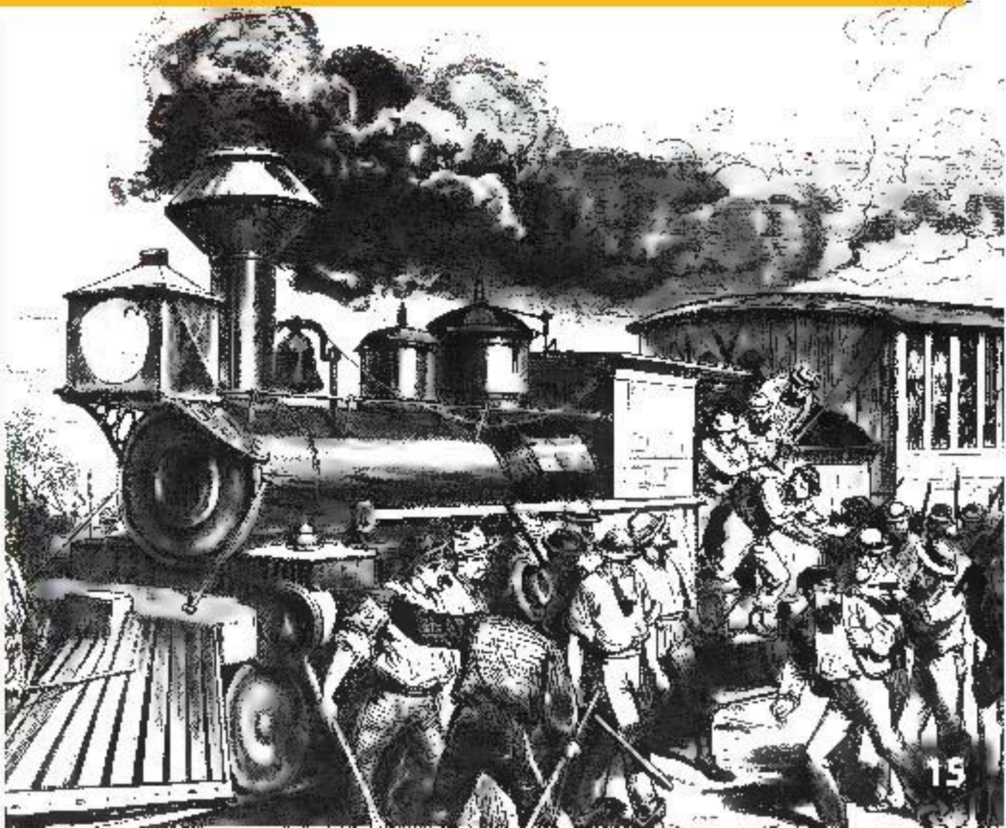
महान रेलमार्ग हड़ताल

1873 में, अमेरिका कठिन आर्थिक संकट में पड़ गया था. देश मंदी में था. कई श्रमिकों की नौकरियाँ चली गईं और उनके परिवार गरीब, भूखे और बेघर हो गए थे. रेलकर्मी अक्सर अपनी नौकरी पर बने रहते थे, लेकिन मैरी ने देखा कि उनके कार्यदिवस लंबे होते गए और उनका वेतन बार-बार घटता गया.

जुलाई 1877 में, चार प्रमुख रेलरोड कंपनियों के प्रमुखों ने अपने कर्मचारियों के वेतन में 10 प्रतिशत की कटौती करने का निर्णय लिया. यह श्रमिकों के लिए ब्रेकिंग पॉइंट था. वेस्ट वर्जीनिया में रेल कर्मचारियों ने सबसे पहले काम करना बंद किया. जल्द ही यह हड़ताल अन्य रेलवे लाइनों में भी फैल गई, और देश में अब तक की सबसे बड़ी हड़ताल बन गई. कुल मिलाकर, सभी पृष्ठभूमि के लगभग 100,000 मज़दूर - पुरुष और महिलाएँ, काले और गोरे- हड़ताल पर चले गए. कुछ शहरों में, हड़तालें हिंसक हो गईं और दंगों में बदल गईं. रेलरोड हड़ताल केवल दो सप्ताह तक चली, लेकिन इसमें 100 लोग मारे गए और कई घायल हो गए. अंत में, सरकार ने कदम उठाया और रेल कंपनियों का पक्ष लिया.

इस हड़ताल ने मैरी जोन्स पर बहुत अच्छा प्रभाव पड़ा. श्रमिकों ने सरकार और व्यापारिक नेताओं को कड़ा संदेश भेजा था कि वे अब दुर्व्यवहार से थक चुके थे. मैरी को विश्वास होने लगा कि अधिक संगठित होकर, हड़ताली श्रमिक अमेरिका में अपनी भूमिका को बदल सकते थे.

मार्टिंसबर्ग, वेस्ट वर्जीनिया के ये रेलकर्मी, 1877 की बाल्टीमोर और ओहियो रेलरोड हड़ताल में नौकरी छोड़ने वाले पहले श्रमिक. कभी-कभी ये हड़तालें दंगों में बदल जाती थीं.



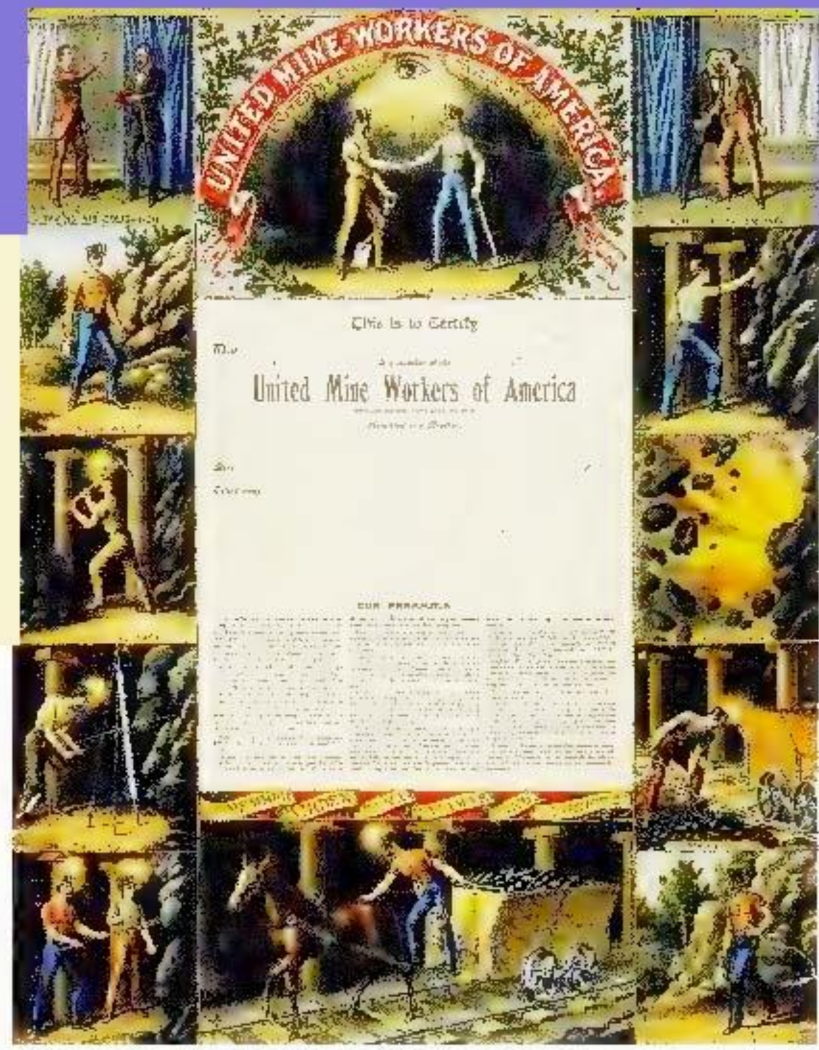
खनिकों की जीत

शिकागो और अन्य शहरों के मजदूरों ने भी हड़तालें कीं. हड़ताल के दौरान, कर्मचारी अपना काम छोड़कर चले जाते थे और अक्सर विरोध में मार्च निकालते थे. वे तब तक काम पर लौटने से इनकार करते जब तक कंपनी उनके वेतन और कामकाजी परिस्थितियों में सुधार नहीं करती थी. कुछ हड़तालें इतनी हिंसक हो गईं कि पुलिस को उन्हें ख़त्म करना पड़ा. मैरी ने निर्णय लिया कि यदि श्रमिक बेहतर ढंग से संगठित हों, तो वे अधिक परिवर्तन प्राप्त कर सकते हैं.

मैरी कार्यकर्ताओं की बैठकों में भाग लेने के लिए देश भर में यात्रा करने लगीं. बैठकों में, वो धीमी, स्पष्ट आवाज़ में बोलती थीं जिससे कार्यकर्ताओं को प्रेरणा मिलती थी. वो अपने विचारों को लेकर सशक्त और सीधी थीं. उन्होंने बाद में कहा, "जनता सबसे ज्यादा नींद में रहने वाली भीड़ है. आपको उन्हें जगाना होगा! फिर आपको कार्रवाई करनी होगी." कार्यकर्ता मैरी का उनके अथक परिश्रम के लिए सम्मान करते थे. वे बच्चों की तरह उनके पीछे-पीछे चलते थे. 1890 के दशक तक लोग उन्हें "मदर" जोन्स कहने लगे.

मैरी ने पूरे देश की यात्रा की और कार्यकर्ताओं की बैठकों में भाग लिया. उनकी कठोर बातों ने कार्यकर्ताओं को कार्रवाई करने के लिए प्रेरित किया. वो कहती थीं, "मृतकों के लिए प्रार्थना करो, और जीवित लोगों के लिए मरते दम तक लड़ो."





यूनाइटेड माइन वर्कर्स (यूएमडब्ल्यू) ने खदान श्रमिकों की जरूरतों को पूरा करने के लिए एक यूनियन का गठन किया. खदान श्रमिकों को खदान धंसने, फेफड़ों की बीमारी और लंबे समय तक काम करने जैसी कठिन परिस्थितियों का सामना करना पड़ता था.

मदर जोन्स 1890 के दशक में यूनाइटेड माइन वर्कर्स (यूएमडब्ल्यू) नामक एक नए संघ में शामिल हुईं. उन्होंने वेस्ट वर्जीनिया, अलबामा और पेंसिल्वेनिया में खदानों की यात्रा की. वहां उसने प्रत्यक्ष रूप से देखा कि खनिकों को हर दिन किन खतरों का सामना करना पड़ता था. गुफाओं में चट्टानें खनिकों पर गिर सकती हैं. खदानों के अंदर और बाहर कोयला ले जाने वाली मालवाहक गाड़ियाँ रास्ते में आने वाले श्रमिकों को कुचल सकती थीं. कुछ खनिकों को कोयले की मोटी धूल में साँस लेने के कारण फेफड़ों की बीमारियाँ हो गईं थीं. खनिक अक्सर प्रति दिन 14 घंटे, सप्ताह में 6 दिन काम करते थे, फिर भी, वे बमुश्किल जिंदा रहने लायक ही कमा पाते थे. कई लोगों को अपने परिवार का पालन-पोषण टूटी-फूटी झोंपड़ियों में करना पड़ता था.

मदर जोन्स ने उन्हें यूएमडब्ल्यू में शामिल होने के लिए कहा. उन्होंने उनसे कहा कि कई कार्यकर्ता एकजुट होकर एक मजबूत लड़ाकू शक्ति बना सकते थे. खनिक मज़दूर यूनियन में शामिल हो गए और उन्होंने बेहतर वेतन और कामकाजी परिस्थितियों के लिए हड़तालें कीं.

“मैं कलम, तलवार या मचान से नहीं डरती हूँ. मैं हमेशा सच कहूँगी."
- मदर जोन्स

मदर जोन्स में हड़ताल आयोजित करने की अद्भुत प्रतिभा थी. जब श्रमिक काम छोड़कर चले गए, तो उन्होंने खनन करने वाले परिवारों का पेट भरने के तरीके खोजे. उन्होंने कार्यकर्ताओं का उत्साह बढ़ाने के लिए भाषण दिये और रैलियाँ निकालीं. लोग उन्हें "खनिकों की परी" कहते थे और वह श्रमिकों को "अपने लड़के" बुलाती थीं. मदर जोन्स ने परेड में बच्चों का और महिलाओं की जोरदार मार्च में नेतृत्व किया. महिलाओं ने बर्तन और तवे बजाए और विरोध में चिल्लाए. वे इसके लिए आभारी थे कि उन्हें अपने परिवारों के लिए खड़े होने का मौका मिला.

कई कोयला कंपनियों ने हार मान ली, जिससे खनिकों के लिए कार्य के घंटे कम हुए और वेतन बढ़ गया. मदर जोन्स ने अपने लड़कों को दिखाया कि कैसे मिलकर काम करने से वे बदलाव ला सकते थे.



मदर जोन्स में पूरे परिवारों को अपने उद्देश्यों के लिए सक्रिय करने की क्षमता थी. यहां महिलाओं ने यूएमडब्ल्यू के मुद्दों के समर्थन में मोर्चा निकाला.

श्रमिक आंदोलन

अमेरिका में श्रमिक आंदोलन 1830 के आसपास, औद्योगिक क्रांति के दौरान शुरू हुआ. उस समय के दौरान, कारखाने के श्रमिकों ने बड़ी मात्रा में माल का उत्पादन करने के लिए बिजली से चलने वाली मशीनरी का उपयोग करना शुरू कर दिया. 1800 के दशक के मध्य तक, श्रमिक राष्ट्रीय यूनियनों में संगठित हो रहे थे. समय के साथ, कुछ शक्तिशाली यूनियनें उभरीं, जिनमें नाइट्स ऑफ लेबर, अमेरिकन फेडरेशन ऑफ लेबर (एएफएल), इंडस्ट्रियल वर्कर्स ऑफ द वर्ल्ड (आईडब्ल्यूडब्ल्यू), और कांग्रेस ऑफ इंडस्ट्रियल ऑर्गनाइजेशन (सीआईओ) शामिल थीं.

यूनियनों ने कुछ प्रगति की. लेकिन अक्सर उन्हें असफलताओं का सामना ही करना पड़ा, क्योंकि हड़तालें विफल रहीं और सरकार व्यापारिक पूंजीपतियों के साथ खड़ी रही. 1930 के दशक की महामंदी के दौरान एक महत्वपूर्ण मोड़ आया, जब अमेरिका को कठिन आर्थिक दौर का सामना करना पड़ा. अमेरिकियों ने सोचा कि यदि श्रमिकों के पास अधिक पैसा होगा, तो वे अधिक सामान खरीद पाएंगे. वो अर्थव्यवस्था के लिए अच्छा होगा. सरकार ने व्यवसायों के बजाय श्रमिकों का पक्ष लेना शुरू कर दिया. 1930 के दशक में कांग्रेस ने नए कानून पारित किए जिससे यूनियनों को शक्ति और सुरक्षा मिली.

अमेरिका में श्रमिक आंदोलन ने श्रमिकों को उच्च वेतन, कम काम के घंटे और बेहतर कामकाजी परिस्थितियाँ हासिल करने में मदद की है. आज, यूनियनें शिक्षकों, नर्सों और अभिनेताओं सहित कई प्रकार के श्रमिकों की रक्षा करती हैं. अमेरिका का सबसे बड़ा और सबसे शक्तिशाली संघ संगठन AFL-CIO है. यह संगठन कई स्थानीय और राष्ट्रीय यूनियनों के लिए काम करता है. देश में सभी यूनियन सदस्यों में से लगभग तीन-चौथाई AFL-CIO से संबंधित हैं.

1830 के दशक में उभरी कुछ शक्तिशाली यूनियनें आज भी मौजूद हैं. एएफएल-सीआईओ अभी भी श्रमिकों की चिंताओं को दूर करने के लिए मालिकों को मजबूर करने के लिए हड़ताल का उपयोग करता है.



बच्चों का मार्च

अब "खनिकों की परी" के नाम से प्रसिद्ध, मदर जोन्स ने श्रमिकों के एक अन्य समूह - बच्चों - का भी मुद्दा उठाया. 1900 तक, 16 वर्ष से कम उम्र के लगभग 20 लाख बच्चे कपड़ा मिलों, कारखानों और खदानों में नौकरी कर रहे थे. मदर जोन्स विशेष रूप से उन हजारों बच्चों के बारे में चिंतित थीं जो कपड़ा मिलों में लंबे समय तक काम करते थे. उनका मानना था कि बच्चों को स्कूल जाने और धूप और ताज़ी हवा में खेलने की आज़ादी होनी चाहिए थी.

जून 1903 में, मदर जोन्स फिलाडेल्फिया, पेंसिल्वेनिया गईं, जहां मिल मजदूर हड़ताल पर थे. हड़ताल क्षेत्र की 600 मिलों में फैल गई थी. नौकरी छोड़ने वालों में हजारों बच्चे भी शामिल थे. हड़ताली चाहते थे कि उनका कार्यसप्ताह 60 से घटाकर 55 घंटे कर दिया जाए, भले ही इसके लिए उन्हें वेतन में कटौती करनी पड़े.

1900 तक, 16 वर्ष से कम उम्र के लगभग 20 लाख बच्चों के पास कपड़ा मिलों, कारखानों और खदानों में काम कर रहे थे. यहां एक बहुत छोटी लड़की एक कपड़ा मिल में भारी मशीनरी के पास खड़ी है.





कारखानों में बच्चों को अक्सर गंभीर चोटें लगती थीं. क्योंकि वे छोटे थे, उन्हें अक्सर खतरनाक स्थानों में पुर्ज़े फिट करने और मशीनरी को ठीक करने के लिए कहा जाता था.

मदर जोन्स ने श्रमिकों के हित के लिए जनसमर्थन बढ़ाकर उनकी मदद करने की योजना बनाई. उन्होंने फिलाडेल्फिया की सड़कों पर बच्चों और उनके माता-पिता के एक बड़े समूह का नेतृत्व किया. फिर उन्होंने भाषण दिया. मदर जोन्स ने एक लड़के की बांह पकड़ ली. उसके हाथ की एक उंगली गायब थी. फिर उन्होंने कहा, "फिलाडेल्फिया की हवेलियां इन बच्चों की टूटी हड्डियों, कांपते दिलों और झुके हुए सिरों पर बनाई गई थीं." लेकिन शहर के नेताओं ने मजदूरों की मदद करने से इनकार कर दिया.

"मैंने दुनिया को गरीब, मेहनती लोगों के लिए एक बेहतर जगह बनाने के लिए अपना सर्वश्रेष्ठ प्रयास किया है."

- मदर जोन्स

मैरी जानती थीं कि बदलाव लाने के लिए उसे पूरे देश के ध्यान को आकर्षित करने की ज़रूरत थी. उन्होंने फिलाडेल्फिया से न्यूयॉर्क शहर तक एक यात्रा (मार्च) की योजना बनाई. उन्होंने कहा, "मैं वॉल स्ट्रीट को वह मांस और खून दिखाने जा रही हूं जिससे वो अपनी संपत्ति निचोड़ता है." यात्रा लगभग 100-मील (160-किलोमीटर) की दूरी तय करती और राष्ट्रपति थियोडोर रूजवेल्ट के ग्रीष्मकालीन घर पर समाप्त होती.



जब मदर जोन्स ने अपने पैदल मार्च का आयोजन किया था तब थियोडोर रूज़वेल्ट राष्ट्रपति थे. उनके सचिव ने मदर जोन्स से कहा कि राष्ट्रपति उनकी मदद के लिए कुछ नहीं कर सकते थे.

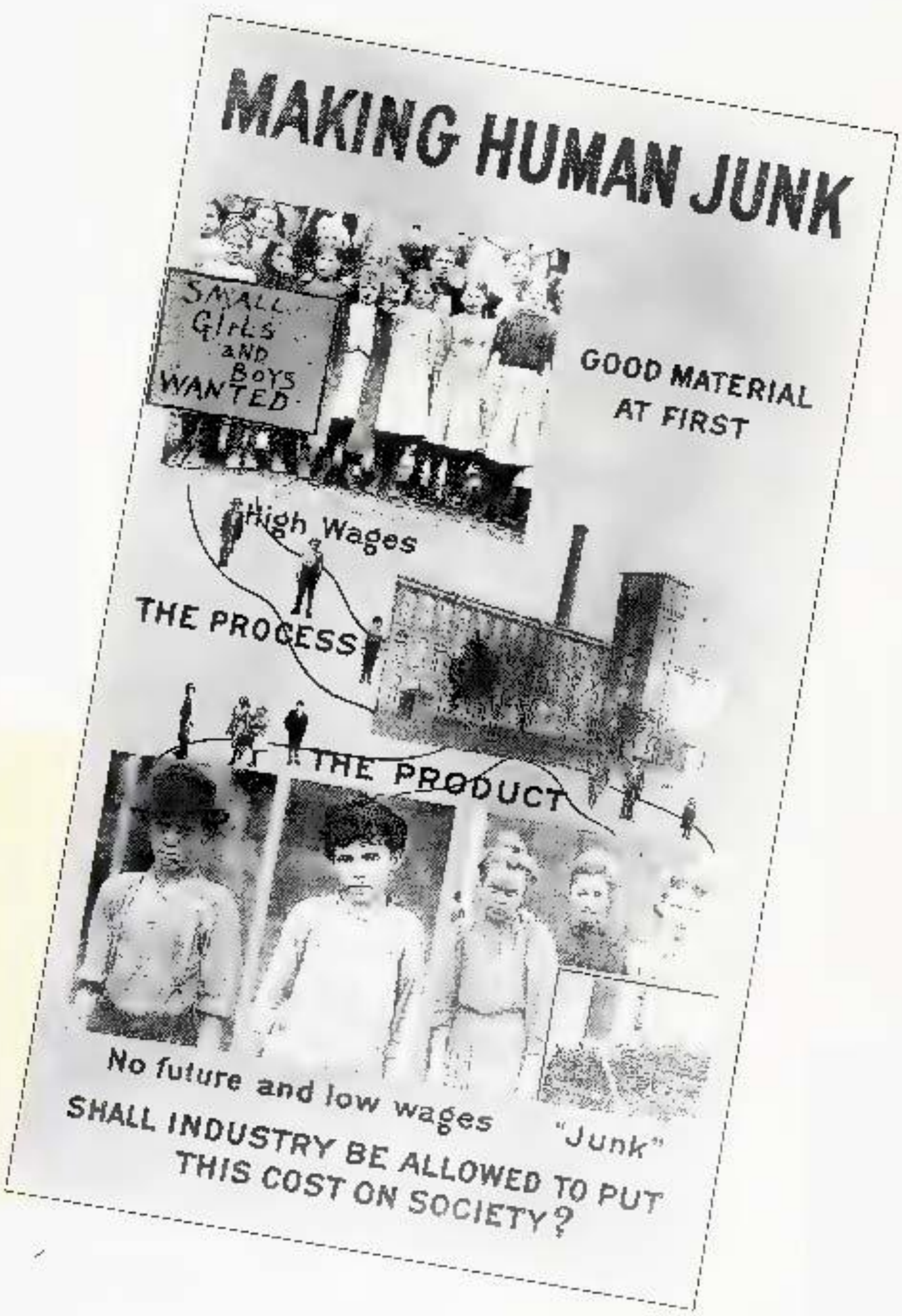
7 जुलाई, 1903 को मदर जोन्स ने 100 लड़कों और लड़कियों के साथ-साथ कई वयस्क श्रमिकों और श्रमिक नेताओं के साथ पैदल मार्च शुरू किया. गर्मी में धूल भरी सड़कों पर चलने से बच्चों के पैर दुखने लगे थे. कुछ मार्चकर्ता अपने घर लौट गये.

मार्च करने वालों ने गीत गाए और उनके हाथ में झंडे थे. बच्चों के हाथ में लकड़ी के बोर्ड थे जिन पर लिखा था, "हमें खेलने का समय चाहिए" और "हम केवल न्याय की माँग कर रहे हैं." वो समूह, जिसे "मदर जोन्स इंडस्ट्रियल आर्मी" के नाम से जाना जाता था, रास्ते में कस्बों में रुका. मदर जोन्स को सुनने के लिए हजारों लोग आये.

मार्च करने वाले लगभग तीन सप्ताह तक सड़क पर रहने के बाद न्यूयॉर्क शहर पहुँचे. उस रात, हजारों न्यूयॉर्कवासियों ने मदर जोन्स और उनके अनुयायियों को सेकेंड एवेन्यू तक मार्च करते देखा. तीन दिन बाद, मदर जोन्स ने एक मनोरंजन पार्क, कोनी द्वीप में एक बड़ी भीड़ को भाषण दिया. उन्होंने कहा, "हम चाहते हैं कि राष्ट्रपति रूजवेल्ट उन बच्चों का रोना सुनें जिन्हें कभी स्कूल जाने का मौका नहीं मिला है."

28 जुलाई को, मदर जोन्स तीन मिल लड़कों को राष्ट्रपति रूजवेल्ट के घर ले गईं. लेकिन उन्हें गेट से अंदर नहीं जाने दिया गया. अगले दिन मदर जोन्स ने राष्ट्रपति रूजवेल्ट को एक पत्र लिखा. उन्होंने राष्ट्रपति से कहा कि वो किसी भी समय उनके साथ बात करने में प्रसन्न होंगी. वो मिल के बच्चों के लिए राष्ट्रपति की मदद चाहती थीं. राष्ट्रपति के सचिव ने जवाब भेजकर कहा कि राष्ट्रपति मदद के लिए कुछ नहीं कर सकते थे.

न्यूयॉर्क में कुछ और दिनों के बाद, मार्च करने वाले लोग घर लौट आये. हड़ताल समाप्त हो गई और बच्चे काम पर वापस चले गए. पर मदर जोन्स और उनके मार्च करने वाले लोगों ने, कामकाजी बच्चों की ओर देश का ध्यान आकर्षित करने में मदद की थी. कुछ लोगों ने इस आयोजन को मदर जोन्स की सबसे बड़ी उपलब्धियों में से एक बताया. समय के साथ, बाल श्रमिकों के प्रति जागरूकता बढ़ने से सकारात्मक बदलाव आए. 1938 में, अमेरिकी कांग्रेस ने बच्चों की सुरक्षा के लिए एक श्रम कानून पारित किया - वो बच्चों के मार्च के 35 साल बाद लागू हुआ.



मदर जोन्स ने बाल श्रम के मुद्दे पर ध्यान आकर्षित करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई. बाल श्रम के विरुद्ध जनता की प्रतिक्रिया तीव्र थी. आख़िरकार, अमेरिकी कांग्रेस को बच्चों की सुरक्षा के लिए कानून पारित करना पड़ा.

एक खतरनाक औरत

मदर जोन्स ने दुर्व्यवहार से पीड़ित श्रमिकों की मदद के लिए देश भर में यात्रा करना जारी रखा. 1905 में, उन्होंने इंडस्ट्रियल वर्कर्स ऑफ़ द वर्ल्ड (IWW) बनाने में मदद की. इस संघ ने बेहतर कामकाजी परिस्थितियों के लिए लड़ने के लिए विभिन्न उद्योगों के श्रमिकों को एक साथ लाया. संघ के नेताओं में मदर जोन्स एकमात्र महिला थीं. श्रमिक संगठन खतरनाक थे. अन्य महिलाएँ इतनी सक्रिय भूमिका निभाने के लिए पर्याप्त साहसी नहीं थीं.

मदर जोन्स कामकाजी लोगों के लिए एक भयंकर सेनानी के रूप में प्रसिद्ध हो गई थीं. कई अखबारों ने उनके बारे में और उन हमलों के बारे में रिपोर्ट की, जिनके नेतृत्व में उन्होंने मदद की थी. उन्होंने श्रमिकों के समर्थन में पूरे देश में लेख लिखे और भाषण दिए. लेकिन सभी ने उनके काम की सराहना नहीं की. कुछ लोगों ने उन्हें अमेरिका की सबसे खतरनाक महिला बताया. उन्हें मदर जोन्स उपद्रवी लगीं.

1914 में, जब वह 77 वर्ष की थीं, मदर जोन्स को कोलोराडो में खनिकों की हड़ताल में मदद करने के लिए गिरफ्तार किया गया. वो लगभग एक महीने तक अदालत के तहखाने में बंद रही.

मदर जोन्स IWW के नेताओं में से एक थीं. इस पोस्टर में यूनियन की कुछ चिंताओं को दर्शाया गया है.





यहाँ चित्रित महिलाओं ने मदर जोन्स के समर्थन में मार्च किया जब 1914 में मदर जोन्स को कैद किया गया था.

जेल से, मदर जोन्स ने श्रमिकों और समाचार पत्रों को पत्र लिखना जारी रखा. डेनवर, कोलोराडो के एक अखबार को लिखे पत्र में उन्होंने लिखा, "बेशक मैं जेल से बाहर आना चाहती हूं. सूरज की रोशनी से दूर रहना सुखद नहीं है." लेकिन जेल ने मदर जोन्स को मजदूरों से विमुख नहीं होने दिया. "मैं दृढ़ता से खड़ी रहूंगी," उन्होंने मज़दूरों से कहा.

मदर जोन्स अपने बाद के वर्षों में कुछ धीमी हो गईं. वो गठिया रोग से पीड़ित थीं. वो दर्दनाक बीमारी जोड़ों और मांसपेशियों को प्रभावित करती थी. हालांकि फिर वो मज़दूरों के बीच उतनी नहीं निकल पाईं, लेकिन फिर भी मशहूर रहीं. 1925 में, उन्होंने अपने जीवन की कहानी लिखी, जिसका नाम "द ऑटोबायोग्राफी ऑफ मदर जोन्स" है. उन्हें अपने जीवन के बारे में बात करने में आनंद आया और उन्होंने अपना आखिरी साक्षात्कार 1930 की गर्मियों में दिया. मदर जोन्स को विशेष रूप से गर्व था कि कई राज्य बाल श्रमिकों की सुरक्षा के लिए कानून पारित कर रहे थे. "हम जीते हैं!" उन्होंने कहा.



मदर जोन्स का स्मारक

"दोनों तरफ उनके लड़के हैं."

"भविष्य श्रमिकों के मजबूत हाथों में है."
- मदर जोन्स

मदर जोन्स की मृत्यु 30 नवंबर 1930 को हुई, जब वो 93 वर्ष की थीं. इलिनोइस के माउंट ओलिव में एक खनिकों के कब्रिस्तान में, जहां उन्हें दफनाया गया था, हजारों लोग उनकी अंतिम संस्कार सेवा में शामिल हुए. वो कब्रिस्तान उन श्रमिकों को समर्पित था जो 1898 की हड़ताल में मारे गए थे. मदर जोन्स ने कहा था कि वो "उन बहादुर लड़कों के साथ मिट्टी के नीचे सोना चाहती थीं." उन्होंने अपना जीवन कामकाजी लोगों के लिए संघर्ष करते हुए बिताया. श्रमिकों के अधिकारों में उनके निडर विश्वास ने हजारों पुरुषों, महिलाओं और बच्चों को अपने लिए खड़े होने के लिए प्रेरित किया. मदर जोन्स ने साबित कर दिया कि जब वे एक साथ लड़ेंगे, तो श्रमिक अपना जीवन बदल पाएंगे.

क्या आपको पता है

- मदर जोन्स ने हमेशा दावा किया कि उनका जन्म 1 मई, 1830 को हुआ था. लेकिन इतिहासकारों का मानना है कि उनका जन्म 1837 में हुआ था.
- मदर जोन्स ने सोशलिस्ट पार्टी के लिए एक वक्ता के रूप में काम किया. समाजवादियों का मानना था कि समुदायों के पास ज़मीन, फ़ैक्टरियाँ और अन्य व्यवसाय होने चाहिए. तब सभी लोग सामुदायिक संपत्ति द्वारा उत्पादित धन को साझा कर सकते थे.
- कोयला खनिकों और मिल बच्चों की ओर से काम करने के अलावा, मदर जोन्स ने एरिज़ोना में तांबा खनिकों, शिकागो में टेलीग्राफ ऑपरेटरों, न्यूयॉर्क में कपड़ा श्रमिकों और मिल्वौकी, विस्कॉन्सिन में शराब बनाने वाले श्रमिकों के लिए लड़ाई लड़ी.
- मदर जोन्स अपनी तीक्ष्ण बुद्धि के लिए जानी जाती थीं. उन्होंने एक बार राष्ट्रपति थियोडोर रूजवेल्ट पर इस बात के लिए मज़ाक उड़ाया था कि गुप्त सेवा के इतने सारे लोग एक बूढ़ी औरत और बच्चों की सेना पर नजर रखे हुए थे.
- मदर जोन्स का मानना था कि महिलायें जब बोलती थीं तो उससे उन्हें शक्ति मिलती थी. उन्होंने एक बार कहा था, "आपको वोट की ज़रूरत नहीं है...आपको दृढ़ विश्वास और अपनी आवाज़ बुलंद करने की ज़रूरत है!" वो चाहती थीं कि गरीबों को भी अमीरों के समान अधिकार और अवसर मिलें.
- 1992 में, मदर जोन्स को वाशिंगटन, डी.सी. में अमेरिकी श्रम विभाग के हॉल ऑफ फ़ेम में शामिल किया गया था.



मदर जोन्स और राष्ट्रपति केल्विन कूलिज का चित्र.

महत्वपूर्ण तिथियाँ

1837: मैरी हैरिस का जन्म आयरलैंड के कॉर्क में हुआ.

1857: मैरी टोरंटो, कनाडा में टीचर्स कॉलेज में गईं.

1859: मैरी मोनरो, मिशिगन चली गईं.

1860: मैरी शिकागो, इलिनोइस और फिर मेम्फिस, टेनेसी चली गईं.

1861: मैरी ने जॉर्ज जोन्स से शादी की और आयरन मोल्डर्स यूनियन के बारे में जाना. (उम्र 24)

1862: मैरी और जॉर्ज की पहली संतान कैथरीन का जन्म हुआ.

1863: उनकी दूसरी संतान एलिजाबेथ का जन्म हुआ.

1865: बेटे टेरेंस का जन्म हुआ.

1867: सबसे छोटी बेटी, मैरी का जन्म हुआ; येलो फीवर ने मैरी के चार बच्चों और पति जॉर्ज (उम्र 30) की जान ले ली.

1868: मैरी शिकागो चली गईं और कपड़े बनाने का व्यवसाय शुरू किया, (उम्र 31).

1871: ग्रेट शिकागो फायर ने मैरी के सिलाई व्यवसाय को नष्ट कर दिया;
मैरी श्रमिकों के अधिकारों की लड़ाई में सक्रिय हुईं.

1877: रेल कर्मचारियों की पहली राष्ट्रव्यापी हड़ताल शुरू हुई.

1880 का दशक: मैरी "नाइट्स ऑफ लेबर" में शामिल हुईं.

1890 का दशक: मैरी को मदर जोन्स के नाम से जाना जाने लगा. वह यूनाइटेड माइन वर्कर्स ऑफ अमेरिका के लिए काम करना शुरू करती है; उन्होंने खनिकों को यूनियन में शामिल होने के लिए कहने के लिए खदान वाले शहरों की यात्रा की.

1894: मदर जोन्स ने कपड़ा मिलों का दौरा किया और काम कर रहे बच्चों को देखा. (उम्र 57)

1903: मदर जोन्स ने जुलाई में मिल चिल्ड्रन के मार्च का नेतृत्व किया.

1905: मदर जोन्स ने विश्व के औद्योगिक श्रमिकों के गठन में मदद की.

1914: कोलोराडो में एक खनिक की हड़ताल के दौरान मदर जोन्स को जेल में डाल दिया गया.

1930: 30 नवंबर को मदर जोन्स की मृत्यु हो गई. (आयु 93 वर्ष).